REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 7 | ISSUE - 11 | AUGUST - 2018

कमलेश्वर के उपन्यासों मे लोक संस्कृति

प्रा. डॉ. अनुप सहदेव दळवी
रा.ब.नारायणराव बोरावके महाविद्यालय, श्रीरामपूर, जि.अहमदनगर

प्रस्तावना :

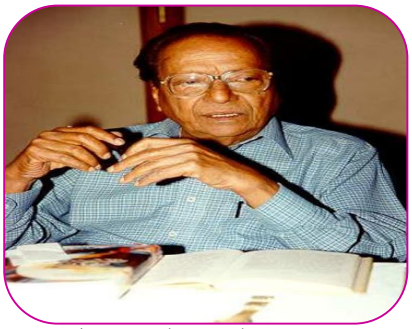

मानव, समाज और संस्कृति का संबंध अन्योन्याश्रित हैं। मानव समाज की इकाई है और समाज संस्कृति का प्रमुख आधार है। लोक संस्कृति के अन्तर्गत जनजीवन से संबंधित सभी आचार-विचार, विधी-निषेध, विश्वास मान्यताएँ, प्रथाएँ, परम्पराएँ, धर्म अनुष्ठान आदि का समावेश होता है। लोकतत्व में हमारी संस्कृति पूरी झाँकी विद्यमान है । भारतीय संस्कृति का सच्चा स्वरूप, ग्रामीण जीवन में प्रतिबिम्बित होता है। जनजीवन की कलाएँ, पर्व, त्यौहार, रूढ़ियों, प्रथाएँ, मनोरंजन आदि विभिन्न तत्वों का सहयोग संस्कृति में पाया जाता है। संस्कारों के नींव पर ही भारतीय संस्कृति सुरक्षित है। प्रत्येक समाज अपने मूल्यों और धारणाओं को सजीव एवं सुरक्षित रखने के लिए उनके प्रति निष्ठा और विश्वास रखता है। कमलेश्वर के उपन्यास अलग-अलग युगों की संस्कृति की व्याख्या करते हैं। उन युगों में प्रचलित लोक संस्कृति एवं तत्वों का सहज रूप से चित्रण मिलता है। विभिन्न एवं विभिन्न स्तरों के लोगों के खान-पान, रहन-सहन, आचार-विचार, वेशभूषा, शिक्षा-दिशा, संस्कार, पर्व, उत्सव, लोकविश्वास, धार्मिक मान्यता आदि का उल्लेख मिलता है। कमलेश्वर के उपन्यासों में चित्रित लोक संस्कृति के तत्वों को विभिन्न पहलुओं में विभाजित किया जा सकता है-

१. विवाह:-

भारतीय संस्कृति में विवाह प्रथा का परम्परा के अनुसार अनन्य साधारण महत्व है। विवाह-संस्कार पति-पत्नी को आजीवन एक-दूसरे का साथ देने का एक पवित्र बंधन है। हिंदू संस्कृति में अग्नि को साक्षी मानकर विवाह संपन्न होता है, जिसमें नाते-रिश्तेदार तथा बन्धु-बान्धव सम्मिलित होते हैं। वेद-मन्त्रों द्वारा वर-वधु एक-दुसरे के प्रति अनन्य प्रेम के लिए कामना करते हैं। हिन्दू शास्त्रों में विवाह को इतना महत्व दिया है कि, बिना पत्नी के पुरुष और बिना पुरुष के पत्नी को कोई धार्मिक कर्म करने का अधिकार नहीं है। विवाह को संस्कृति का आधार स्तंभ मानते हुए मालती शर्मा 'गोपिका' ने लिखा है- विवाह मानव जीवन का महत्वपूर्ण संस्कार है। यह स्त्री-पुरुष के अत्यंत प्राकतिक आकर्षण को सामाजिक धरातल और स्वीकृति देनेवाला संस्कार है। अनेकानेक विरोध विसंगतियों के बावजूद सृष्टि के उद्देश की पूर्ति, जीवन की निरंतता के लिये यह अपरिहार्य है। विवाह स्वस्थ विकृतिहीन मानव जाति और स्वस्थ सामाजिक जीवन का आधार है। सभ्यताओं और संस्कृतियों की निर्माण भूमि, आधार स्तंभ है।[५५] भारतीय वैवाहिक पध्दति का काफी प्रभाव कमलेश्वर के उपन्यासों में दृष्टिगत हैं। 'अम्मा' उपन्यास की नायिका शान्ता के विवाह के हर्षो-उल्हासित वातावरण का चित्रण इन शब्दों में हुआ है- "पावन गोदावरी नदी के किनारे बसे नासिक नगर की रेलवे कॉलनी में आज बड़ी धूमधाम थी। नासिक रेल्वे स्टेशन के असिस्टेंट स्टेशन मास्टर की बेटी शान्ता की आज शादी होनेवाली थी। कॉलोनी में रहनेवालों ने बारात के लिए जगह-जगह स्वागत द्वार बनाए थें। उन्हें बड़ी खूबसूरती से केले, आम के पत्तों से सजाया गया था। कॉलनी के इस छोर से लेकर उस छोर तक रंग-बिरंगे कागजों की झाडियाँ लगाकर वातावरण को और भी सुन्दर बना दिया था।"[९] शादी के अवसर पर विविध रस्म

रिवाज सम्पन्न होते हैं। शादी के सम्बन्ध में दुल्हन की दो प्रकार की भावनाएँ होती है- एक अपने घर परिवार को छोड़ने का दुख और दूसरी एक अन्य परिवार से जुड़ने का सुख। सुख-दुख की मिश्रित भावनाएँ उसे बेचैन करती है। विवाह के पूर्व शान्ता के अर्न्तमन की भावनाओं का चित्रण हुआ है- "आज मेरी शादी हो जाएगी और मै एक अनजाने व्यक्ति के पल्लू से बाँधकर एक अजनबी शहर के एक पराए घर में चली जाऊँगी। उस घर के सभी लोग अपरिचित होंगे, अनजाना वातावरण होगा। मैं किस तरह रह पाऊँगी उस पराए घर और अनजाने लोगों के बीच...।"[२] विवाह की परम्परागत मान्यताओं के अनुसार शुभ मुहुर्त में शान्ता और प्रवीन को पंडितों ने वेद मन्त्रों और अग्नि को साक्षी बनाकर एक सूत्र में बाँध दिया ।

भारतीय संस्कृति के अनुसार बेटे-बेटी की शादी निश्चित करने के अधिकार माता- पिता के हाथ में होते हैं। उन्हें अपनी संतानों की शादी निश्चित करने का अधिकार परम्परा ने दिया है। इसीं परम्परागत संस्कृति का प्रतिपादन करती हुई 'पति-पत्नी और वह' उपन्यास की नायिका शारदा अपना हाथ माँगनेवाले रंजीत को कहती है- "रंजीतबाबू आप इस बात को अच्छी तरह जानते ही होगे कि मैं एक हिंदुस्थानी लड़की हूँ और हिंदुस्थानी लड़कियाँ अपने लिए खुद लड़के पसन्द नहीं किया करतीं। उन्हें अपनी पसन्द से शादी करने का कोई अधिकार नहीं होता, उनकी शादी तो उनके माँ- बाप की मर्जी से होती है।"[३] पति के घर दुल्हन का स्वागत लक्ष्मी समझकर किया जाता है। 'तीसरा आदमी' उपन्यास की चित्रा का नरेश के घर दुल्हन के रूप में सम्मान किया गया- "घर पर चित्रा का खूब स्वागत हुआ। सभी ने उसे पसन्द किया और उसके रूप को सहारा था। बहनों ने अपनी भाभी को बेहद पसन्द किया था।"[४] नयी दुल्हन का परिवार के लोगों के द्वारा काफी सम्मान होता है। विवाह पध्दतियाँ जाति-धर्मों एवं विभिन्न सम्प्रदायों के अनुसार भिन्न होते हैं। 'अनबीता व्यतीत' उपन्यास की समीरा राजपूतों की चली आ रहीं परम्परा को निभाते हुए बड़े-बूढ़ों के अपनी शादी के निर्णय को सिर झुकाकर स्वीकार करता है। उसकी शादी उसके माता-पिता, नाना और परिवार के लोगों के द्वारा चुने गये लड़के से ही निश्चित की जाती है। परतुं शादी के लिए उसके पसन्द या नापसन्द का विचार नहीं किया जाता। उनके ही शब्दों में-" समीरा का विवाह निश्चित तिथि की बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ । उसी पुरानी राजसी ठाठ-बाट और शान के साथ समीरा दुल्हन बनकर अपनी ससुराल रतनपुर चली गई।"[५] समीरा के विवाह के अवसर पर समेरगढ़ के प्राचीन दुर्ग की प्राचीरों, बुर्जो और राजमहल की मरम्मत की जाती है। मित्र और सम्बन्धित राज्यों के यहाँ से हाथी-घोड़े भी मँगवा लिए गये तथा नगर के सभी गणमान्य व्यक्तियों और सरकारी कार्यालयों के अधिकारियों को भी आमंत्रित किया गया।

भारतीय संस्कृति के अनुसार विवाह सात जन्मों का पवित्र बन्धन माना जाता है। परतुं युगानुरूप है, बदलती लोक संस्कृति एवं पाश्चात्य सभ्यता का अंधानुकरण का प्रभाव परम्परागत भारतीय संस्कृति पर हावी होता हुआ दिखाई देता है। 'वही बात' उपन्यास की नायिका समीरा प्रशान्त को छोड़कर नकुल के साथ शादी करती है। उसी समय नकूल अपने आधुनिक विचारों का प्रतिपादन करता हुआ समीरा को समझता है-" तुमने कोई पाप नहीं किया है। अगर शादी पवित्र है तो तलाक भी उतना ही पवित्र है, शादी के गलत हो जाने पर भी तलाक न लेना शायद पाप होता... पर तुमने तलाक लिया है... फिर हमने शादी की है..।"[६] अभिजात्य जीवन शैली तथा पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण के परिणाम स्वरूप, पति-पत्नी के रिश्तों में बदलाव आया है। युगानुरूप बदलते आचार-विचारों का प्रभाव विवाह सम्बन्धों में दृष्टिगत होता है, जिसे कमलेश्वर ने प्रामाणिक रूप में अपने उपन्यासों में चित्रित किया है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि विवाह संस्कार समाज व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। विवाह संस्कार के द्वारा स्त्री-पुरुषों के पारस्परिक सम्बन्ध तथा पारिवारिक व्यवस्था का संयोजना होती है। कमलेश्वर के उपन्यासों में विवाह सम्बन्धी विविध प्रथाएँ, परम्परा तथा बदलती परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण समग्र दृष्टि से हृदयंगम है।

२. अंधविश्वास

लोक संस्कृति की अपनी एक परम्परा के अनुसार लोक जीवन क्रियाशील रहता है। लोक में व्याप्त संस्कार, रीति-रिवाज, पर्व, त्यौहार, परम्परा तथा अंधविश्वास लोक जीवन का महत्वपूर्ण अंग हैं। भारतीय समाज परम्परावादी एवं अंधविश्वास से युक्त होने के कारण युगों से अनेक स्वार्थान्ध लोगों के द्वारा उनका शोषण किया जाता है। इस सम्बन्ध में डॉ.अजय पटेल ने उचित ही कहा है- "प्रारम्भ में भारतीय जनसमुदाय धार्मिक आडम्बरों एवं अंधविश्वासों का शिकार बनता आया है। स्वार्थी शासकों एवं पाखण्डी ऋषि, आचार्य आदि की कुनीतियों और दुष्प्रवृत्तियों के कारण पूरा समाज धार्मिक आडम्बरों एवं अंधविश्वासों के जाल में उलझा हुआ था।"[७] कस्बाई जीवन से लेकर महानगरीय जनजीवन के सभी पहलुओं का यथार्थ चित्रण कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों किया है। समाज के विभिन्न पहलुओं को उज़ागर करना ही उनके उपन्यासों का

लक्ष्य है। अत: ग्रामीण जीवन में व्याप्त धार्मिक रूढ़ियाँ और अंधविश्वासों का पर्याप्त चित्रण उनके उपन्यासों के कारण में होने 'अम्मा' उपन्यास की नायिका शान्ता को उसके पति के चिता में सती होने के लिए विवश किया जाता है। परतुं उसके ससूर बाबू कुन्दनलाल अपनी बहु को जलती चिता से निकाल लेते हैं तो समाज के अंधविश्वासी लोग उनका विरोध करते हैं- "आप अधर्मी हैं बाबू कुन्दनलाल। धर्म के काम में रोड़े अटका रहे हैं। बरसों के बाद एक नारी अपने पति के साथ सती होकर सतियों की मर्यादा का पालन कर रही है। अपने पति के लिए अपने प्राणों का बलिदान कर रही है...।"[८] बाबू कुन्दनलाल सती होने को आत्महत्या करना मानकर समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का विरोध करते हैं। परतुं उनके विपरीत उनकी पत्नी सरस्वती पति की चिता में पत्नी के सती होने को महान कार्य समझती है। वह मानती है उसकी बहु के सती होने से उसकी खानदान का सम्मान बढ़ेगा। शान्ता को अपने घर वापस लाने से उसे बहुत दुख होता है। वह शान्ता को प्रेत के समान मानती है- "उनके लिए शान्ता मर चुकी थी और जिसे उसके पति के घर ले आए थे, वह शान्ता नहीं शान्ता का प्रेत था। प्रेतात्मा थी और प्रेतात्मा का किसी भी घर में रहना अत्यन्त अशुभ और अमंगलकारी था।"[९] समाज में प्रचलित अंधविश्वासों के संस्कार सरस्वती में हावी होने के कारण उसकी परछाई को छूना भी वह पाप मानती है। समाज में पापपुण्य की परिभाषा अपने परम्परागत संस्कार पर निर्भर है। कुछ पाखण्डी साधु-पंडित लोगों को ईश्वर का भय दिखाकर उन्हें ठगाने का प्रयास करते हैं। सामान्य अनपढ़ लोग अपने अंधविश्वासों के कारण उनकी बातों पर विश्वास करते हैं। लोगों के अंधविश्वासों का लाभ उठाकर 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास का पंडित रामलिला देखने के लिए आयी स्त्रियों को शाप देता है- "मैं कहता हूँ कि जो इन उपदेशों पर कान नहीं देंगी... भगवान की लीला में हर तरह से विधन डालेंगी सो अगले जनम में छछूंदर की योनि पाएंगी।"[१०] अत: स्पष्ट है समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का प्रतिपादन कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों से प्रस्तुत किया है। अंधविश्वासों के साथ ही विभिन्न रीति-रिवाजों का प्रचलन समाज में दिखाई देता है।

३. खान -पान :-

भारतीय समाज में वर्ग निहाय खान-पान का स्वरूप, अलग-अलग प्रकार का होता है। उनमें विशेषत: समाज का खान-पान सामान्य होता है। सुबह उठने पर स्नानादि के पश्चात् किसी काम पर जाने के पूर्व चाय-कॉफी, नाश्ता आदि लिया जाता है। मध्यवर्ग का खान-पान सामान्य होते हुए भी उनमें सफाई की खास विशेषता होती है। जिसे भारतीय संस्कृति में शिष्टाचार के नाम से अभिहित किया जाता है। 'वही बात' उपन्यास की समीरा अपने पति के साथ आये कलक्टर साहब तथा उनके अन्य सहयोगियों को अच्छा खाना बनाकर खिलाने पर वह उसकी प्रशंसा हेतु कहते हैं- "यह तो जंगल में मंगल कर दिया भाभी जी ने। खाना कमाल का है। और ये कोफ्ते। वाह! यह किसकी चवाइस है? आपकी या भाभी की ?"[११] भारतीय संस्कृति में अतिथि सत्कार का विशेष महत्व होता हैं। अतिथि के लिए स्वादिष्ट खाना बनाने पध्दति समाज में प्रचलित है।'पति-पत्नी और वह' उपन्यास का नायक रंजीत शारदा का हाथ माँगने के लिए जब उसके घर जाता है तब उसके पिता दिलीप सिन्हा अपनी बेटी से कहते हैं-" शारदा, रंजीत बाबू आज पहली बार हमारे घर आए हैं। इन्हें कुछ खिलाओं- पिलाओं बेटी।"[१२] इसीं उपन्यास की शारदा अपने पति रंजीत के पेट दर्द का खयाल कर उसी तरह का खाना उसे खिलाना चाहती है- " तुम्हें कब्ज हो गया होगा, बस सूप और दही खना बिलकुल बन्द... जब तक पेट पूरी तरह साफ न हो जाए- मेरा मतलब है कब्ज दूर न हो जाए सिर्फ सूप और दही ही लेना है तुम्हें।"[१३] उच्चवर्गीय लोगों में होटल में खाना खाना, शराब पीना, नाचना आदि प्रवृत्तियों भी पायी जाती है। 'डाक बंगला' उपन्यास की नायिका इरा जब बतरा के साथ वोल्गो होटल जाती है तब वह पाती है- "वोल्गा की वह रात बडी मादक थी। साढे आठ बजे से साढे दस तक डिंक्स चलते रहे, फिर डिनर चलता रहा... बॅण्ड की धुन हाल में गूँज रही थी और सिगरेटों का धुआँ ऊपर परत की तरह जमा होता रहा था। कॉफी के दौर के साथ ही डांस में मस्ती आ गई थी। वैसे कई जौड़े बीच-बीच में ही नाचते रहे थे।"[१४] पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव स्वरूप, हमारे मध्यवर्गीय समाज में आजकल डिनर पार्टी का प्रथा खूब प्रचलित होने लगी है।

४. संयुक्त परिवार :-

भारतीय संस्कृति में परम्परागत रूप में पति-पत्नी के अतिरिक्त परिवार में माता-पिता, पति-पत्नी, भ्राता-भगिनी, ननन्द- भौताई, पुत्र-पुत्री, देवर-भाभी, बहु और अन्य नाते- रिश्तेदार भी रहते हैं। परिवार के सदस्य एक-दूसरे के सुख-दुख में सम्मिलित होते हैं। परिवार के सभी सदस्य एक ही मकान में रहते हैं तथा एक ही रसोई में पका भोजन करते हैं। परिवार का मुखिया सबसे वयोवृध्द सदस्य या पिता होता है। जिनका नियन्त्रण परिवार के सभी सदस्यों पर होता है। डॉ.हेतसिंह बघेला

संयुक्त परिवार को कानूनी आधार पर परिभाषित करते हुए लिखते हैं- "हिन्दू कानून में संयुक्त पूर्वज के अन्तर्गत उन लोगों को गिना जाता है, जो एक सामान्य पूर्वज के वंशज हों (जिनमें उनकी पत्नियाँ एवं अविवाहित पुत्रियाँ भी शामिल हैं) उन्हें संयुक्त रूप से एक संयुक्त परिवार तभी तक माना जाता है जब तक यह प्रमाणित न हो जाये कि परिवार के सदस्य विभाजित हो गये हैं।"[१५] त्यौहार तथा धार्मिक कृत्यों में परिवार के सभी लोग सम्मिलित होते हैं। परिवार में आयी नई नवेली बहु पर अपने पारिवारिक परम्परागत संस्कार करते हुए 'अम्मा' उपन्यास की सास सरस्वती अपनी नई बहु शान्ता को समझाती है- "शान्ता, उस ओर देखो- आँगन के उस कोने में तुलसी का वह बिरवा... जिस दिन से इस घर में आई हूँ नियम से रोजाना जल चढ़ाती हूँ। शाम को दीपक जलाती हूँ , घर के छोटे से मन्दिर में विराजमान ठाकूरजी की नित्य नियम से सेवा पूजा करती हूँ और बेटी, आज तक इस घर से न तो कोई खाली हाथ गया है और न भूखे पेट किसी ने इस घर की चौखट से बाहर पाँव रखा है- यहीं है हमारे परिवार की परम्पराएँ। इसे निभाने की पूरी-पूरी कोशिश करना बहू।"[१६] परिवार के मुखिया के द्वारा अपने पुत्र पर अपने परिवार के प्रति गहरी आत्मीयता के संस्कार किये जाते हैं। अपने संयुक्त परिवार के संस्कार हावी होने के कारण ही 'तीसरा आदमी' उपन्यास का नरेश कहता है- "परिवार भी मेरा ऐसा था कि उसमें रहते हुए मैंने कभी अपने अलग घर की कल्पना नहीं की थी, इसलिए अपनी अलग पसन्द की बात भी दिल में नहीं आई थी। तब तक घर में जो कुछ होता था, वह सबकी पसन्द से ही होता था कोई भी चीज आती थी तो 'घर' के लिए आती थी, किसी एक के नाम लिखकर नहीं।"[१७] संयुक्त परिवार में सभी सदस्यों के उन्नति के लिए सहयोग, सामाजिक गुणों की शिक्षा, श्रम विभाजन, व्यक्तिवादी प्रवृत्ति पर नियन्त्रण, एक-दुसरे के प्रति आत्मीयता, निष्ठा तथा प्रेमभाव के संस्कार परिवार के मुखिया के द्वारा किये जाते हैं।

५. आयुर्वेदिक औषधियों का महत्व:-

भारतीय जीवन साधना में जड़ी-बूटियाँ तथा आयुर्वेद का प्राचीन काल से अनन्य साधारण महत्व रहा है। 'आगामी अतीत' उपन्यास का वैद्य एम.बी.बी.एस. का अध्ययन करनेवाले कमलबोस को आयुर्वेदिक औषधियों की श्रेष्ठता का बयान करता है-" अच्छा, एक बात बताओ... हमारी युनानी और आयुर्वेदिक औषधियों का मुकाबला तुम्हारी अँग्रेजी दवाइयाँ कर सकती है?"[१८] इसीं उपन्यास का वैद्य अंग्रेजी दवाइयों के दुष्परिणामों का प्रतिपादन करते हुए कहता है-" अँग्रेजी दवाइयों में जो सबसे बड़ा ऐब है, वह यह कि एक बीमारी ठीक करती हैं- तो दूसरी शुरू कर देती हैं.. यक्ष्मा की दवा करो तो नजर कमजोर होने लगती है, याददाश्त खत्म होने लगती है.. पित्त की दवा करो तो दमे की शिकायत शुरू हो जाती है।"[१९] वैद्य को उसकी बेटी चंदा जड़ी-बूटियाँ जंगल से लाने जंगल से लाने के लिए मदद करती है। जड़ी-बूटियों के द्वारा चंदा भी मरीजों को ठीक करती है। वैद्य का व्यवसाय अपने पिताजी के द्वारा उसे विरासत में प्राप्त है। अपने वैद्यक व्यवसाय कुशलता के कारण वह डाक्टर कमलबोस को कहती है- "अरे डाक्टर हो, इतना भी नहीं मालूम? सातों नमक लेलो और इन्हें सुखाकर कूट-पीसकर मिला लो, तो भीतर के सब दर्द दूर हो जाते हैं।"[२०] भारत में प्राचीन काल से वैद्यक शास्त्र की गति दिखाई देती है। आयुर्वेदिक औषधियाँ किसी भी बीमारी का जड़ से मिटा देती है तथा इन आयुर्वेदिक औषधियों का कोई अन्य असर शरीर पर नहीं होता है। अत: भारतीय समाज में आयुर्वेदिक औषधियों के प्रति स्वाभाविक रूप में आकर्षण दिखाई देता है। कमलेश्वर ने 'आगामी अतीत' उपन्यास में जड़ी-बूटियाँ तथा आयुर्वेदिक औषधियों की विश्वसनियता उजाकर की है।

६. लोकमंगल की भावना :-

'बहुजन हिताय बहुजन सुखाय' का आदर्श एवं लोकमंगल की भावना कमलेश्वर के साहित्य की विशेषता है। सत्य, अहिंसा, त्याग, सेवा भारतीय संस्कृति के अभिन्न तत्वों के अनुसार उन्होंने सत्य तलाश ने का प्रयास किया है। समाज में प्रचलित अन्याय, अत्याचार, विद्रुपता, पाखण्ड, हिंसाचार तथा तमाम अमानवीय तत्वों को समाप्त करते हुए विभिन्न जाति- धर्मों तथा विभिन्न देशों के बीच उन्होंने समन्वय का प्रयास किया है, जो लोकमंगल की भावना से ही अभिभूत है। कमलेश्वर ने 'एक सड़क सत्तावन गलियाँ' उपन्यास में स्वतंत्रता के बाद आए परिवर्तनों को तथा आध्यात्मिकता के नाम पर हो रहे अनैतिक व्यवहारों का पर्दाफाश किया है। रामलीला के प्रसंगों से लोगों को भावनाशील बनाकर उनके रुपये गुंडानेवाले? पात्रों से बचने का उपदेश दिया है। उपन्यास का प्रसंग दृष्टव्य है- "लक्ष्मण शक्तिवाली लीला ऐसी निकली, जैसी पहली कभी नहीं हुई। भक्तों का समुदाय उदारता से उमड़ पडा। मंच पर भक्त समुदाय की भीड़ लग गई, लोग जा-जाकर खुद रुपये देने लगे। जगह कम पड़ी तो तबलची थोड़ा विंग कें सरक गए। रामजी की चढ़ौती देखने के लिए मूर्च्छित लक्ष्मणजी ने चादर सरकाकर

देखने भर के लिए मुँह खोल दिया।"[२१] प्रस्तुत उपन्यास में बांसिरी के जरिए नारी जीवन की विसंगति और सरनाम द्वारा मानवीय जीवन-मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास किया गया है। उन्होंने समाजवाद की स्थापना के लिए सामाजिक अव्यवस्था एवं कुरीतियों के प्रति विद्रोह सरनाम के द्वारा किया है- "यहाँ किसी मालिक की छत ऊँची नहीं, किसी सेठ का मकान चमचमाता हुआ नहीं। पर यहाँ हर ब्राह्मण की इज्जत ऊँची है, हर कायस्थ का माथा चमचमाता है हुआ है, हर क्षत्रिय की नाक ऊँची है। इस झूठी इज्जत को धूल में मिलाइए उस चमचमाते खोखले माथे को सुकाइए उन ऊँची नाकों को काटिए- तब बराबरी होगी। बराबरी।"[२२] जाति व्यवस्था के परे समाजवाद की स्थापना पर कमलेश्वर ने जोर दिया है।

कमलेश्वर साम्प्रदायिकता से बढ़कर मानवीय मूल्यों एवं मानवता को महत्व दिया है। 'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास की प्रमुख पात्र नसीबत के द्वारा ममता, स्नेह, सहानुभूति, दया, करूणा आदि मानवीय मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास किया गया है। इसीं उपन्यास का पात्र 'बच्चन' अपनी बेटी की हड्डी टूटने पर उसे नसीबन के पास लेकर आता है तब वह उसे अस्पताल लेकर जाती है। रातभर जागने के बाद बच्चन जब उसे सोने के लिए कहता है तब वह कहती है- "मरद नहीं समझ सकते बाल-बच्चों का सुख-दुख।"[२३] भारत-पाक विभाजन का जीवंत दस्तावेज 'लौटे हुए मुसाफिर' उपन्यास है। इसमें हिन्दू- मुसलमानों के बीच राजनीतिक लोगों के द्वारा साम्पायिकता का जहर घोल दिया जाता है। परंतु नसीबन अफवाहों और औरों की बातों की परवाह न करती हुई हिंदू-मुसलमानों के बीच समझौता करने का प्रयास जीवन मूल्यों के प्रति आस्था है। विभाजन के समय बिखरे चिकवा बस्ती के मुसलमान बच्चों के लौटने पर उसकी खुशी का ठिकाना नहीं रहता- "नसीबन की आँखों में चमक भर गई और उसका बदन खुशी से थरथराने लगा, इधर तुम्हारे घर थे... अरे तू बसीर तो नहीं? लगता तो वैसा ही है।"[२४] अपने बस्ती के बिखरे हुए बच्चों के वापस आने पर नसीबन अत्यन्त सन्तुष्ट बन जाती है। वह उन बच्चों को अपने पुराने घर दिखा देती है। परतुं वहाँ केवल मलबा शेष है तो वह उनके रहने-खाने का इन्तजाम करती है। अत: स्पष्ट है कि, कमलेश्वर ने नसीबन के माध्यम से मानवीय मूल्यों की रक्षा की हैं।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के लिए शहीद हुए बड़े दादा के अरमानों की पूर्ति करनेवाली पपौत्री शान्ता 'सुबह-दोपहर-शाम' उपन्यास की नायिका है। वह नारी में केवल त्याग, बलिदान एवं ममता की भावनाएँ मात्र नहीं, जान की बाजी लगाकर लड़ने की शक्ति का भी परिचय देती है। शान्ता के क्रान्तिकारी देवर नवीन के तलाश में अँग्रेज सिपाही होली के दिन उनके घर आते हैं। तब उसका पति प्रवीन होली के रंगों से रंग गया था, इसलिए उस पर सन्देह करकर अंग्रेज सिपाही उसके मूँछों पर हाथ लगाने पर शान्ता अन्हें फटकारती हैं- "ऐई फिरंगी बाबू ! मूछों को हाथ मत लगाना... मैं तुम्हारा खून पी जाऊंगी ... ये मेरे मरद की मूंछे हैं। कहते हुए उसने अंग्रेज इंस्पैक्टर का हाथ झटक लिया था।"[२५] अँग्रेजों ने उनके त्यौहार, मेले, विवाह आदि अवसरों में दखल देकर भंग कर देते थे। क्योंकि उसका देवर नवीन क्रान्तिकारी था, वह अपने देश को आजाद करने के लिए अँग्रेजों के विरूध्द लड़ाई लड़ रहा था। अत: कमलेश्वर ने क्रान्ति के द्वारा देश की मुक्ति का आवाहन अपने देशवासियों का किया है।

स्वतंत्रता के पश्चात् आज विश्व के सभी राष्ट्रों में स्वंय को शक्तिशाली सिध्द करने की होड़ लगी हुई हैं। विभिन्न देशों के बीच परमाणु शस्त्र-अस्त्रों की बढोत्तरी की प्रतियोगिता मानव अस्तित्व को नष्ट करने का प्रयास कर रहीं है। इसलिए साम्राजवादी ताकतों एवं धर्म के ठेकेदारों को कमलेश्वर ने फटकारा है। 'कितने पाकिस्तान' उपन्यास में उन्होंने कबीर के द्वारा विश्वशान्ति का प्रयास किया है। उन्होंने कबीर में बुध्द, गाँधी, नानक, सूर की समन्वित, शक्ति, बुध्द की करूणा और महावीर की अहिंसा को देखा है इसलिए उन्होंने सभी को शान्तिदूत के रूप में प्रस्तुत किया है। कबीर के द्वारा बोधिवृक्ष लगाने का प्रयोजन उन्होंने उपन्यास में प्रस्तुत किया है-" हॉ बोधिवृक्ष... मेरे इस झोले में उसी की पौध है। बोधिवृक्ष की जड़े नीलकंठ की तरह सारा विष पी लेती हैं... पहला बोधिवृक्ष मैं पोखरन में लगाऊँगा फिर सरहद पार करके दूसरा वृक्ष मैं चगाई की पहाड़ियों में लगाऊँगा...।"[२६] कमलेश्वर का कबीर के द्वारा सफेद छड़ी लेकर कदम उठाना विश्वशान्ति का प्रयास ही है, जो लोकमंगल की उदात्त भावना से अभिभूत है।

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कमलेश्वर के उपन्यासों में जनजीवन से सम्बन्धित सभी आचार-विचार, विधि, प्रथाएँ, रीति-रिवाज, परम्पराएँ, धर्म, अनुष्ठान का चित्रण हुआ है, जिसमें जनजीवन का रहन-सहन, खान-पान, शकुन-अपशकुन, विवाह, अंधविश्वास, पारिवारिक स्थितियाँ, जड़ी-बूटियों की औषधियों के प्रति लोक विश्वास तथा लोकमंगल की भावना लोकसंस्कृति का महत्वपूर्ण अंग है। भारतीय संस्कृति के अनुसार उदारता, सहिष्णुता, दया-क्षमा, त्याग-सेवा, कर्तव्य-निष्ठता, सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, अन्याय के प्रतिकार में निर्भयता, असत का विरोध, समन्वय, देश-सेवा तथा राष्ट्रप्रेम की भावना की अभिव्यक्ति लोक संस्कृति की भावना से अभिभूत है।

संदर्भ संकेत

१) अम्मा- कमलेश्वर-पृ-९
२) वही- पृ-२
३) पति पत्नी और वह- कमलेश्वर- पृ-३४
४) समग्र उपन्यास (तीसरा आदमी)- कमलेश्वर - पृ-१६४
५) अनबीता व्यतीत- कमलेश्वर- पृ-९०
६) समग्र उपन्यास (वही बात)- कमलेश्वर- पृ-५४८
७) नरेंद्र कोहली के उपन्यासों में युगचेतना- डॉ.अजय पटेल- पृ-२०६
८) अम्मा- कमलेश्वर -पृ- ७३
९) वही- पृ-७५
१०) समग्र उपन्यास (एक सड़क सत्तावन गलियाँ)- कमलेश्वर- पृ-१३
११) समग्र उपन्यास (वही बात)- कमलेश्वर- पृ-५३७
१२) पति-पत्नी और वह- कमलेश्वर- पृ-३५
१३) वही- पृ-८२
१४) समग्र उपन्यास (डाक बंगला)- कमलेश्वर- पृ-२४६
१५) भारतीय संस्कृति का विकास- डॉ.हेतसिंह बघेला- पृ-५६
१६) अम्मा- कमलेश्वर- पृ-२८
१७) समग्र उपन्यास (तीसरा आदमी)- कमलेश्वर- पृ-१६२
१८) समग्र उपन्यास (आगामी अतीत)- कमलेश्वर- पृ-४५१
१९) वही- पृ-४५१
२०) वही- पृ-४५३
२१) समग्र उपन्यास (एक सड़क सत्तावन गलियाँ)- कमलेश्वर- पृ-१५-१६
२२) वही- पृ-१६
२३) समग्र उपन्यास (लौटे हुए मुसाफिर)- कमलेश्वर- पृ-११७
२४) वही- पृ-१५३
२५) समग्र उपन्यास (सुबह-दोपहर-शाम)- कमलेश्वर- पृ-६६१
२६) कितने पाकिस्तान- कमलेश्वर- पृ-३६२-३६३